ब्रायलर पालन कैसे करें

डॉ. ज्योति पलोड, सह प्राध्यपक, पशुपोषण विभाग, गोबिन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर . 263145, ऊधमसिंह (उत्तरांचल) एवं डॉ. विद्यासागर सिंह, पशु चिक्तिसा अधिकारी, कार्यालय सहायक निदेशक, पशुधन विकास, जयपुर (राजस्थान)

भारत वर्ष में कुक्कट पालन सदियों से होता रहा है। यह उद्योग मांस उत्पादन या अंडो के उत्पादन हेतू किया जाता है। कुक्कुट पालन की वह शाखा जिसमें मांस पैदा करने वाली नस्ल के एक दिन के चूजों को लेकर 5-8 सप्ताह में मांस हेतु 1-2 किलाग्राम वजन वाला करके बेच दिया जाता है। ब्रायॅलर पालन कहलाता है।

ब्रायॅलर पालन आज कृषि जगत की सर्वधिक गतिशील शाखाओं में से एक है। यह उद्योग आज न केवल भारत वरना समस्त विश्व में एक महत्वपूर्ण उद्योग के रूप में पनप रहा है। ब्रायलर पालन व्यवसाय की सुगमता एवं देश में बढ़ती हुई पशु प्रोटीन की मांग को देखते हुए इस उद्योग ने कई लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट भी किया है जिससे इस क्षेत्र में लोगों की रूचि बढ़ी है। आज से चार दशक पूर्व तक जहां यह कार्य दड़बों में किया जाता था वहीं अब यह सुनियोजित वैज्ञानिक तकनीक से व्यावसायिक रूप में किया जा रहा है।

वर्तमान समय में देश के निम्न पोषण स्तर को उठाने में ब्रॉयलर पालन का महत्व अत्यंत बढ़ गया है। ब्रॉयलर का मांस जहां एक ओर उच्च किस्म के प्रोटीन का उत्तम स्त्रोत है वहीं इसमें विभिन्न विटामिन भी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं।

ब्रायलर पालन व्यवसाय से लाभः

- ब्रायॅलर पालन लघु स्तर पर कम पूंजी लगाकर प्रारंभ किया जा सकता है।
- इस व्यवसाय में आय जल्दी मिलने लगती है।
- ब्रॉयलर पालन के लिए कम स्थान की आवश्यकता होती है। ब्रॉयलर्स के आवास हेतु स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों को प्रयाग में लाकर सस्ती आवास व्यवस्था की जा सकती है।
- ब्रॉयलर पालन व्यवसाय में पारिवारिक श्रम का उपयोग किया जा सकता है। इस व्यवसाय का कार्य बच्चे, महिलाएं एवं वृद्ध भी आसानी से कर सकते है।
- यह वर्ष भर चलने वाला उद्योग है।
- ब्रॉयलर पालन से उच्च किस्म के प्रोटीन एवं अन्य पौष्टिक तत्वों की प्राप्ति होती है। अत: देश में कुपोषण दूर करने में इसकी अहम भूमिका है।
- इस व्यवसाय से खेती के लिए पर्याप्त मात्रा में पोटाश मिलता है।
- यह व्यवसाय देश के कई लोगों को स्वरोजगार दिलवा कर बेरोजगारी से मुक्ति दिलाता है।

ब्रॉयलर पालन कैसे करें

ब्रॉयलर पालन एक व्यवसाय है जिस प्रकार किसी भी व्यवसाय की सफलता कई कारकों पर निर्भर करती है उसी प्रकार ब्रॉयलर पालन भी एक विशिष्ट कार्य है जिसके सफल संचालन हेतु तकनीकी जानकारी, लगातार मेहनत एवं सतर्कता बरतने की आवश्यकता होती है। यह व्यवसाय छोटे स्तर पर शुरू करके धीरे धीरे वास्तविक अनुभव से बढ़ाने पर अत्यंत लाभकारी सिद्ध होती है। इस उद्योग की सफलता विभिन्न कारकों के अनुकूलतम अंश तक समन्वय पर अत्यंत निर्भर है। ब्रॉयलर पालन की सुनिश्चित सफलता हेतु निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए:

- अच्छी नस्ल का चुनाव
- संतुलित आहार
- उचित प्रबंधन
- रोगों की रोकथाम एवं सही उपचार
- सही विपणन व्यवस्था

अच्छी नस्ल का चुनाव :- ब्रॉयलर पालन व्यवसाय की सफलता के लिए यदि चूजे ही अच्छी नस्ल के नहीं होंगे तो सस्ता संतुलित आहार देने पर भी इनसे अधिक मात्रा में मांस प्राप्त होगा। चूजों में कुछ रोग जैसे सी.आर.डी. सालमोनेला आदि अंडे के माध्यम से आ जाते हैं। अत: चूजे सदैव अच्छी नस्ल के एवं सही हैचरी से क्रय करने चाहिए जिनके चूजे भारत सरकार द्वारा किये गये रैंडम सैम्पल परीक्षण से खरे उतरे हों।

आहार व्यवस्था :– ब्रॉयलर पालन व्यवसाय का लगभग 70 प्रतिशत व्यय आहार पर होता है। अत: इनके आहार पर विशेष ध्यान दिया जाना अति आवश्यक हैं। इन्हें केवल कम लागत वाला संतुलित आहार उचित मात्रा में देकर ही अधिकाधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है। यूं तो एक मांस उत्पादन वाला चूजा 40 से 45 दिनों में तैयार होता है किन्तु यदि उत्तम आहार एवं प्रंबधन हो तो मात्र 30 से 35 दिनों में ही तैयार हो जाता है। ब्रॉयलर पालन में आहार व्यवस्था संबंधित महत्वपूर्ण एवं ध्यान रखने योग्य बातें है–

- ब्रायलर आहार सस्ता एवं संतुलित होना चाहिए। इसके लिए आहार में स्थानीय रूप से कम मूल्य पर उपलब्ध आहार घटकों का समावेश करना चाहिए।
- आहार स्वयं ही तैयार करना चाहिए। छोटे ब्रॉयलर पालन हाथ से मिलाकर एवं बड़े ब्रॉयलर पालन मशीनों के द्वारा स्वयं ही आहार तैयार कर सकते है।
- छोटे चूज़ों के लिये बारीक दाना एवं बड़े चूज़ों के लिए मोटा दाना उपयुक्त रहता है।
- ब्रॉयलर चूजों को सदैव पर्यापत मात्रा में आहार उपलब्ध रहना चाहिए।
- आहार देने के पात्र पर्याप्त संख्या में एवं ऐसे हों जिनमें से चूजे आसानी से दाना खा सकें तथा आहार की अनावश्यक बर्बादी या उनके अंदर गंदगी न कर सकें। दाने के बर्तन स्वच्छ हों।
- मोटे तौर पर 4 सप्ताह तक के दाने के लिए 1 इंच प्रति चूजा एवं 5–8 सप्ताह के चूजों की 2 इंच प्रति चूजा के हिसाब से जगह उपलब्ध होनी चाहिए।
- चूजों को दाने के साथ स्वच्छ ताजा पानी भी स्वच्छ बर्तनों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए। इन बर्तनों से पानी पीते समय चूजे गंदगी न कर पाएं। इस बात का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

उचित प्रबंधन :– ब्रॉयलर पालन व्यवसाय के सफल संचालन के लिए चूजों का उचित प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। यदि तकनीकी जानकारी के अभाव में प्रबंधन संबंधी समस्या आ जाती है तो ब्रॉयलर पालन का पूरा श्रम व्यर्थ हो जाता है एवं कुप्रबंधन के कारण यह व्यवसाय हानि का सौदा हो जाता है। ब्रॉयलर पालन में प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण बातें है :

- ब्रॉयलर फार्म में वायु एवं प्रकाश दोनों के उचित आवागमन की व्यवस्था होनी चाहिए। इस हेतू फार्म पूर्ब पश्चिम दिशा में होना चाहिए।
- ठंड के मौसम में चूजों के आने के कम से कम 12 घंटे पूर्व फार्म में बल्ब जला देने चाहिए। ताकि फार्म गर्म हो जाये।
- शुरू के 1 सप्ताह चूजों के लिये ब्रूडर लगा देना क्योंकि इस समय उन्हें पर्याप्त गर्मी की आवश्यकता होती है। ब्रूडर के सही तापमान का पता चूजों के समान रूप से ब्रूडर के नीचे रहने से चलता है जबकि चूजों का दीवार से सटकर रहना ब्रूडर की अधिक गर्मी एवं ब्रूर के नीचे चूजों का आपस में चिपक कर रहना ब्रूडर की कम गर्मी को दर्शाता है।
- फार्म में ब्रॉयलर कुक्कुटों की संख्या 1 वर्ग फुट स्थान प्रति ब्रॉयलर की आवश्यकता के अनुसार निर्धारित करना चाहिए।
- छोटे चूज़ों को बड़े चूज़ों से अलग रखना चाहिए।
- ब्रॉयलर फार्म का फर्श पक्का होना चाहिए। इस पर बिछावन हेतु गेंहू का भूसा, लकड़ी का बुरादा सूखी घास आदि में से जो भी सस्ता मिले प्रयोग में लाना चाहिए। बिछावन की पत गर्मियों में पतली एवं ठंड में मोटी होनी चाहिए।
- बिछावन में नमी हो जाने पर उसे उलट–पलट देना चाहिए।
- शीत ऋतु में अधिक ठंड से बचाव हेतू मोटे पर्दे एवं हीटर आदि की व्यवस्था होनी चाहिए। गर्मी के मौसम में यदि संभव हो तो कूलर अथवा मोटे टाट या खस की पट्टी लगाकर उस पर पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए।

रोगों की रोकथाम एवं सही उपचार :– यूं तो प्रत्येक ब्रॉयलर पालक रोगों की रोकथाम के महत्व को समझते हुए हर संभव प्रयास करता है किन्तु फिर भी किसी कारणवश या थोड़ी सी असावाधानी से फार्म पर एक बार रोग आ जाए तो कुछ कुक्कुटों से लेकर पूरा का पूरा समूह भी रोग से प्रभावित हो सकता है जिससे ब्रॉयलर पालक को अत्यंत आर्थिक हानि हो जाती है। अत: इलाज से बचाव बेहतर है इस कहावत पर ब्रायॅलर पालक को पूर्ण ध्यान देना चाहिए। फार्म में एक बार संक्रामक रोग का प्रकोप हो जाने पर पूरा का पूरा समूह मृत हो जता है। जो ब्रॉयलर बच जाते हैं उनकी वृद्धि रूक जाती है तथा इन पर दवा का खर्च तक महंगा पड़ने लगता है। अत: फार्म पर रोग न आए तो ही श्रेष्ठ है। यदि रोग आ भी जाए तो तुरंत ही पशु चिकित्सक की सलाह से उपचार शुरू कर देना चाहिए।

रोग के दौरान निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए :

- रोगी कुक्कुटों को स्वस्थ कुक्कुटों से अलग करके दाने–पानी की अलग व्यवस्था करें।

- रोगी कुक्कुटो को छूने के उपरांत हाथ डिटॉल से धोना चाहिए।
- समस्त मृत कुक्कुटों को जलाना या गड्ढे में अच्छी तरह दबा देना चाहिए। ब्रायॅलर कुक्कुटों के रोगों की रोकथाम हेतु निम्न तरीकें अपनाने चाहिए।
- ब्रायॅलर कुक्कुटों के रोगों से नियंत्रण हेतु अच्छी नस्ल का चुनाव, संतुलित आहार व्यवस्था एवं श्रेष्ठ प्रबंधन अपनाए (इन सभी का विस्तृत विवरण दिया जा चुका है)
- रोगों की रोकथाम हेतु अन्य तरीके निम्न है :
- फार्म पर जंगली पक्षी एवं पशु प्रवेश नहीं कर पाएं क्योंकि ये बीमारी के कीटाणु एक फार्म से दूसरे फार्म पर फैला सकते हैं। फार्म पर चूहे भी प्रविष्ट न हों।
- फार्म मुख्य सड़क से लगभग 30 मीटर एवं अन्य फार्मो से लगभग 50 मीटर की दूरी पर हो।
- बॉयलर क्रेताओं एवं उनके द्वारा ब्रायॅलर्स रखने हेतु लाए गये क्रेटों को फार्म के अंदर नहीं लाने दें।
- शेड के प्रवेश स्थल पर कीटाणुनाशक दवाओं के घोल में पैर धोने के उपरान्त ही शेड में प्रवेश करें।
- प्रतिदिन सुबह एवं शाम सावाधानीपूर्वक कुक्कुटों का निरिक्षण करें ताकि रोग आते ही उनकी देखभाल शुरू की जा सके।

ब्रॉयलर कुक्कुटों में रोगों से बचाव हेतु केवल तीन टीके लगवाने होते हैं इनमें से मेरेक्स रोग का टीका पहले ही दिन सामान्यत: हेचरी में लगा दिया जाता है अत: केवल रानी खेत बीमारी का एफ 1 टीका एवं गम्बोरो रोग का टीका उस पर दिये गए समस्त निर्देशों को ध्यान में रखकर प्रत्येक ब्रॉयलर को निश्चित रूप से देना चाहिए।

विपणन व्यवस्था :– ब्रॉयलर पालन में अल्प निवेश पर अधिक आय होने एवं ब्रॉयलर मांस की अच्छी पौष्टिकता के कारण यह एक महत्वपूर्ण उद्योग का रूप ले चुका है। आजकल ब्रॉयलर मांस की मांग बढ़ रही है किन्तु सही विपणन व्यवस्था न होने से अधिकांश ब्रॉयलर पालन सही लाभ नहीं कमा पा रहे हैं जबकि बिचौलिए या दलाल मेहनत न करके भी भरपूर लाभ कमाते हैं जिससे ब्रायॅलर पालकों का शोषण होता है। ब्रॉयलर पालकों को निम्नानुसार विपण व्यवस्था अपनाकर सही लाभ कमाना चाहिए।

- जहां तक संभव हो पूरे ब्रॉयलर एक बार में ही बेच देने चाहिएं।
- विक्रय व्यवस्था इस तरह की रखनी चाहिए कि ब्रॉयलर विक्रय का भुगतान तुरंत ही भुगतान प्राप्त हो जाए।

इस तरह ब्रॉयलर पालक अच्छी नस्ल का चुनाव, सस्ता संतुलित आहार, उचित प्रबंधन, रोगों की रोकथाम एवं सही उपचार तथा सही विपणन व्यवस्था उपरोक्त अनुसार करके इस व्यवसाय से अधिक लाभ अर्जित कर सकते है।